हरियाणा में संरक्षित पुरातत्त्व स्थल

चर्चा में क्यों?

हरियाणा सरकार ने भिवानी ज़िले में 4,400 साल से भी ज़्यादा पुराने दो **हड़प्पा सभ्यता स्थलों** **को संरक्षित स्मारक और पुरातात्त्विक स्थल घोषित किया है।** ये स्थल तिघराना और मितथल गाँव में स्थित हैं।

मुख्य बिंदु

- **अधिसूचना के बारे में:**
  - हरियाणा के धरोहर एवं पर्यटन विभाग के प्रधान सचिव ने एक अधिसूचना जारी कर 10 एकड़ क्षेत्र में फैले मितथल स्थल को हरियाणा प्राचीन एवं **ऐतिहासिक स्मारक तथा पुरातत्त्व स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1964** के तहत संरक्षित घोषित किया है।
  - हरियाणा **विरासत एवं पर्यटन विभाग** इस स्थल की सुरक्षा के लिये कदम उठाएगा, जिसमें बाड़ लगाना और गार्ड तैनात करना शामिल है।
- **मितथल का ऐतिहासिक महत्त्व:**
  - मितथल में वर्ष 1968 से किये जा रहे उत्खनन से **तीसरी-दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की ताम्र-कांस्य युगीन** संस्कृति के साक्ष्य सामने आए हैं।
  - इस जगह **की पहचान सबसे पहले वर्ष 1913 में हुई थी** जब **समुद्रगुप्त के सिक्कों** **का एक भंडार मिला था। वर्ष** 1965 और 1968 के बीच की अन्य खोजों में **मोती, ताँबे के औज़ार और प्रोटो-ऐतिहासिक सामग्री शामिल थी।**
  - मितथल में खुदाई से **शहरी नियोजन, वास्तुकला और शिल्पकला में हड़प्पा परंपराओं का पता चलता है।** इस स्थल से अच्छी तरह से जले हुए मिट्टी के बर्तन, ज्यामितीय डिज़ाइन और **मोतियों, चूड़ियों और टेराकोटा वस्तुओं सहित विभिन्न पुरावशेष मिले हैं।**
- **चिंताएँ:**
  - अधिकारियों के अनुसार, ग्रामीणों ने इस क्षेत्र को पहले कृषि भूमि समझते हुए वहाँ व्यवधान उत्पन्न किया था। **आगे और नुकसान को रोकने के लिये आधिकारिक सुरक्षा की तत्काल आवश्यकता** पर ज़ोर दिया गया है।
  - हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की एक टीम द्वारा इस **स्थल की चार बार खुदाई की गई है** (2016, 2020, 2021 और 2024), जिसमें प्राचीन सभ्यता से संबंधित महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए हैं।
- **तिघराना का पुरातात्त्विक महत्त्व:**
  - तिघराना स्थल हड़प्पा काल के बाद **मानव बस्ती के विकास के बारे में जानकारी प्रदान करता है।**
    - साक्ष्य बताते हैं कि इस क्षेत्र में सर्वप्रथम **ताम्रपाषाणकालीन कृषि समुदाय** लगभग 2,400 ई.पू. **में बसा था।**
  - सोथियन, जैसा कि शुरुआती बसने वालों को जाना जाता था, **छोटे मिट्टी-ईंट के घरों में रहते थे जिनकी छतें फूस की थीं।** वे कृषि में लगे हुए थे और काले और सफेद डिज़ाइनों के साथ चाक से बने मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल करते थे।
  - तिघराना से प्राप्त अवशेषों में **मनके बनाने और आभूषण उत्पादन के साक्ष्य मिले हैं,** जिनमें मोतियों और हरी कार्नेलियन चूड़ियों की खोज भी शामिल है।
  - अधिकारियों ने पुष्टि की है कि चल रही खोजें क्षेत्र में सिसवाल-पूर्व, हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पा-पश्चात की बस्तियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती हैं।

हड़प्पा सभ्यता

- हड़प्पा **सभ्यता,** जिसे **सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) के रूप में भी जाना जाता है, सिंधु नदी के** किनारे लगभग **2500 ईसा पूर्व में विकसित हुई थी।**
- यह **मिस्र, मेसोपोटामिया और चीन के** साथ **चार प्राचीन शहरी सभ्यताओं में सबसे बड़ी थी।**
- **ताँबा आधारित मिश्रधातुओं** से बनी अनेक कलाकृतियों की खोज के कारण सिंधु घाटी सभ्यता को **कांस्य युगीन सभ्यता के रूप में वर्गीकृत किया गया है।**
- **दया राम साहनी ने सबसे पहले वर्ष 1921-22 में हड़प्पा की खुदाई की और राखल दास बनर्जी ने 1922 में मोहनजो-दारो की खुदाई शुरू की।**
  - **ASI के महानिदेशक सर जॉन मार्शल उस उत्खनन के लिये ज़िम्मेदार थे जिसके परिणामस्वरूप सिंधु घाटी सभ्यता के हड़प्पा और मोहनजोदड़ो** स्थलों की खोज हुई।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/protected-archaeological-sites-in-haryana